PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

भाषा की कक्षा में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

✧ प्रमोद दीक्षित 'मलय'

आज देश की सार्वजनिक शिक्षा संक्रमण के दौर से गुजर रही है। आज कोई यह नहीं कह सकता कि यह वही परंपरागत शिक्षा प्रणाली है और न ही हम यह कह सकते हैं कि यह पूरी तरह से बदल गई है बल्कि सीखने–सिखाने के स्तर पर एक सतत संघर्ष जारी है। ऐसे ही संघर्ष का लेखक ने अपने आलेख में चित्रण किया है।

शिक्षा और भाषा के मुद्दों पर काम करने के कारण मुझे अक्सर विद्यालयों में जाना होता है। बच्चों के साथ बैठना और उनसे बातें करना भी मेरे काम में शामिल होता है। विद्यालयों में भ्रमण के दौरान स्पष्ट रूप से यह देखने में आया कि शिक्षण में नवाचारों के प्रयोग और बाल–केंद्रित प्रयासों को गति देने के आग्रहों के बाद भी शिक्षकों के अध्यापन के तौर–तरीके न केवल परंपरागत शिक्षक केंद्रित, भय एवं दंड प्रधान हैं बल्कि कक्षाओं का वातावरण बोझिल, अरुचिकर और नीरस बनाए रखने के लिए भी जिम्मेदार हैं। कुछ स्वप्रेरित शिक्षकों को छोड़कर अभी भी शिक्षकों के एक बड़े हिस्से द्वारा ऐसे कोई सकारात्मक प्रयास नहीं किए जा रहे हैं जिनसे बच्चों को विद्यालय अपनी सपनीली जगह लगे। हम बच्चों को यह एहसास नहीं दिला पाए हैं कि विद्यालय वह रचनात्मक स्थान है, जहां वे अपने सपनों की उड़ान भर सकते हैं, कल्पना को मूर्त रूप प्रदान कर सकते हैं। विद्यालय उस फलक की तरह नहीं उभर पाया है, जहां बच्चे मौलिक चिंतन को अभिव्यक्त कर सकें और विचारों का आदान–प्रदान कर सकें। कक्षा में प्रस्तुत विषय पर उनके अभिमत देने के लिए कोई जगह नहीं बन सकी है। आज भी बच्चों के दिलो–दिमाग में शिक्षक हावी है। विद्यालय उसे अपना–सा लगे और यह तभी संभव होगा जब शिक्षकों को हर बच्चा अपना–सा लगेगा।

एक प्राथमिक विद्यालय में मेरा जाना हुआ। मैं बरामदे में प्रधानाध्यापक के साथ बैठा था। वे विद्यालय के अभिलेख एवं पंजिकाएं आदि दिखा रहे थे। निश्चित रूप से सभी पंजिकाएं साफ–सुथरी, सुंदर लिखावट में थीं। बगल के कक्ष से किसी शिक्षक के पढ़ाने की ध्वनि आ रही थी। सम्भवतः भाषा की कक्षा थी। शिक्षक गाय पर निबंध लिखा रहे थे। निबंध कुछ इस प्रकार था, 'गाय के चार पैर होते हैं, गाय के दो आंखें, दो कान, दो सींग होते हैं। एक लंबी पूंछ होती है। चार थन होते हैं। गाय सफेद रंग की होती है। गाय भूसा खाती है। गाय गोबर करती है। गाय हमारी माता है, आदि। फिर शिक्षक का आदेशात्मक स्वर गूंजा, 'इस निबंध को अच्छी तरह से रट लेना, कल सुनूंगा।' वे शिक्षक एक विशेष प्रकार की संतुष्टि का भाव लिए उस कक्षा से निकलकर दूसरी कक्षा में चले गए। कहना पड़ेगा कि शिक्षक ने अपनी ओर से भरपूर मेहनत की है। लेकिन क्या इस पूरे पीरियड में एन.सी.एफ.–2005 का तनिक भी असर दिखा? क्या बच्चों का परिवेश से संबंध जुड़ पाया? क्या बच्चों के मन में उमड़ते प्रश्नों को स्थान मिल पाया? क्या पूरे समय में बच्चों के मन की बातें

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

जानने की कोई कोशिश हुई या बच्चों को गाय को लेकर अपने अनुभव साझा करने के अवसर मिले? एक ही उत्तर मिलेगा– नहीं, बिल्कुल नहीं।

मैं आश्चर्यचकित था कि एक शिक्षक इस प्रकार कैसे पढ़ा सकता है। अब मेरे लिए अवसर मुंह बाए खड़ा था कि मैं उस कक्षा में प्रवेश करूं और बच्चों से बातचीत करूं। मेरे कक्षा में जाते ही बच्चे सहम–से गए और खिड़की से बाहर झांक रहे बच्चे चुप होकर बैठ गए। मैं अनुभव कर रहा था कि बच्चों में एक डर छुपा बैठा है, लेकिन उनमें मेरे बारे में जानने की उत्सुकता थी। मेरे पीछे विद्यालय के प्रधानाध्यापक भी खड़े थे। उन्होंने बच्चों से कहा, ''चुपचाप सीधे बैठो, ये हमारे अधिकारी हैं। बी.आर.सी. से आए हैं। जो कुछ पूछा जाए, सही–सही बताना।'' यह कहते हुए वे कक्षा में घूम रहे थे और बिना किसी बात के दो–तीन बच्चों के सिरों पर हल्की चपत भी लगाई। मेरे मना करने पर बोले, ''सर, मैं अनुशासन के मामले में बहुत कड़ा आदमी हूं, मेरे रहते बच्चों की मजाल नहीं है कि कोई टस से मस हो जाए।'' मैंने उनसे कहा कि मैं बच्चों से अकेले में बात करना चाहता हूं। वह यह कहते हुए बाहर निकल गए कि यदि बच्चे शोर या मुझे परेशान करें तो मैं उन्हें तुरंत बुला लूं। मैंने कहा कि आपकी जरूरत नहीं पड़ेगी।

अब कक्षा में केवल मैं और बच्चे थे। मैंने बच्चों को अपना परिचय दिया और उनसे भी उनका परिचय देने को कहा। एक भी बच्चा नहीं बोला। सभी सिर झुकाए बैठे रहे। मैंने कई बार कोशिश की। एक भी बच्चे ने नाम नहीं बताया। मैंने एक लड़के को उसका नाम बताने को संकेत किया। वह पैरों की कैंची बनाए और हाथों की अंगुलियों को आपस में फंसाए सिर झुकाए खड़ा हो गया। मैंने देखा वह सिर झुकाए पैर के अंगूठे से फर्श पर कुरेदने जैसा काम कर था और अंगुलियां तोड़–मरोड़ रहा था। एक लड़की से पूछा तो उसने अपनी शर्ट का कोना पकड़े छत पर निगाहें जमा ली। इसी तरह और दो–तीन बच्चों से उनका परिचय जानना चाहा लेकिन वे अबोले ही रहे। मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि बच्चे अपने नाम क्यों नहीं बता पा रहे हैं। मैं सोच रहा था कि क्या करूं, कहां से बात शुरू करूं। तभी, शायद कक्षा में नजर जमाए बरामदे में खडे, प्रधानाध्यापक चिल्लाए, ''अरे, मुंह में दही जमाए हो क्या। क्यों नहीं बोलते, वैसे तो आसमान सर में उठाए रहते हो।'' मुझसे बोले, ''सर आपसे डर रहे हैं, इसीलिए नहीं बोल रहे।'' मैंने बच्चों से मेरे चेहरे की ओर देखने को कहा और चेहरे पर विभिन्न प्रकार की आकृतियां बनाईं तो वे सब खिलाखिला कर हंस पड़े। उनके साथ मैं भी हंस पड़ा। कक्षा का वातावरण थोड़ा हल्का हुआ। अब वे मुझसे नजरें मिला रहे थे। मैंने ब्लैकबोर्ड पर कुछ क्रिया शब्द लिखे– हंसना, रोना, दौड़ना, डरना, गुस्सा, चिल्लाना आदि। मैंने बच्चों से पढ़ने

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

को कहा। कुछ पढ़ पाए, कुछ नहीं। अब मैंने कहा कि मैं इनमें से कोई एक शब्द पढ़ूंगा और आप सब वैसी क्रिया–अभिनय करेंगे। मैंने पढ़ा–रोना। बच्चों ने कुछ भी नहीं किया। मैंने कई बार कोशिश की लेकिन बच्चों ने नहीं किया। उन्हें शायद शर्म आ रही थी। वे कुछ झिझक रहे थे। उनके लिए संभवतः यह सब पहली बार हो रहा था। मैंने प्रक्रिया में बदलाव किया। अच्छा, तो आप में से कोई एक शब्द पढ़ो और मैं वह क्रिया करूंगा। लेकिन शब्द पढ़ने से पहले अपना परिचय भी देंगे। एक लड़की सकुचाती–सी खड़ी हुई और अपना नाम 'रजनी' बोलते हुए शब्द पढ़ा– रोना। तो मैं रोने का अभिनय करते हुए रोने लगा। बच्चे खूब हंसे तालियां बजाकर। फिर दूसरे बच्चे ने अपना नाम 'राज' बोला और शब्द पढ़ा – डरना। तो मैंने डरने की क्रिया की। अब बच्चे बातचीत का मजा लेने लगे थे। हर कोई शब्द पढ़ना और मुझे वैसी क्रिया करते देखना चाहता था। शब्द पढ़ने हेतु खड़े होने के लिए बच्चों में होड़–सी शुरू हो गई। वे ' अब मैं....., अब मैं..... 'अपना नाम बोलते और हाथ से अपने सीने की ओर संकेत करते खड़े होने लगे। इस कारण कक्षा में थोड़ा अफरा–तफरी का माहौल बन गया और शोरगुल भी होने लगा। मैंने कहा कि सबको मौका मिलेगा। आप सब अपनी–अपनी जगह पर बैठिए। कक्षा में बिल्कुल शांति छा गई और वे सब मेरे चेहरे की ओर टकटकी लगाए देखने लगे। मैं बोला कि अब मैं कोई भी शब्द बोलूंगा और आप सब एक साथ चेहरे पर वैसा भाव लाते हुए क्रिया करेंगे। मैंने कहा, रोटी तो बच्चों ने रोटी बनाने और खाने के भाव का प्रदर्शन किया। नींबू कहने पर उनके चेहरे पर खट्टेपन के भाव उभरे। ऐसे ही जलेबी, गन्ना, मिर्च, दाल–चावल, जाड़ा आदि शब्द बोलने पर बच्चों ने उसी प्रकार की अभिव्यक्ति की। अब बच्चे बिल्कुल खुलकर बातें कर रहे थे। मैं तो बच्चों को गाय पर निबंध लिखने के बारे में बात करने आया था। तो उस दिशा में बच्चों को मोड़ते हुए बातचीत का सिलसिला प्रारंभ किया। तो बताओ, आप लोगों में से किस–किस के पास कोई जानवर है। बच्चे बताने लगे– बैल, भैंस, गाय, कुत्ता, बकरी, भेंड़, पड़वा (नर भैंस) आदि। बच्चों ने बातचीत में यह भी बताया कि ये जानवर क्या काम करते हैं। खेती–किसानी में इनकी क्या उपयोगिता है। यदि ये जानवर न हों तो फिर ये काम कैसे निबटाए जाएंगे। बच्चों ने इस पर भी अपने विचार रखे। अच्छा, गाय किनके पास है पूछने पर लगभग तीन चौथाई बच्चों के हाथ ऊपर उठ चुके थे। आप लोग गाय के साथ क्या करते हो। परिवार के अन्य लोग क्या करते हैं? सुबह से शाम तक गाय के साथ क्या क्या घटित होता है। तो आप लोग गाय को जैसा भी देखते हैं, उन अनुभवों को लिखना है। यह आपका अपना निबंध होगा। जिनके पास गाय नहीं है वे अपने पड़ोसी की गाय पर अपना अनुभव लिख कर लाएंगे। तभी एक लड़की ने कहा कि अभी तो सर ने एक निबंध लिखाया है तो उसका क्या। मैंने कहा वह एक सूचना है कि अगर कोई जानवर इस प्रकार की पहचान का हो तो उसे गाय कहा जाएगा। ठीक है, कल हम लोग फिर मिलेंगे तो आगे बात करेंगे।

मैं घर आ गया था। अपनी डायरी में आज दिनभर की गतिविधियों को लिखते समय मेरी आंखों से नींद गायब थी। सुबह का बेसब्री से इंतजार था। बच्चे क्या लिखेंगे, कैसे लिखेंगे, यह सब पढ़ने की मन में आतुरता थी। ऐसा लग रहा था कि आज की रात जैसे दो रातों को मिलाकर एक रात बना दी गई हो। लेकिन सुबह तो होनी ही थी।

दूसरे दिन जब विद्यालय पहुंचा तो बच्चे इंतजार करते मिले। मुझे देखते ही सब अपनी–अपनी कॉपियां लेकर निबंध दिखाने दौड़ पड़े। हर कोई अपनी कॉपी पहले दिखा लेना चाहता था। मैंने सभी

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

के निबंध देखे। मैं आश्चर्यचकित था कि ये कल के वही बच्चे हैं जो बोल–लिख नहीं पा रहे थे। और आज गाय पर अपने अनुभवों के आधार पर निबंध लिख कर लाए थे। सबने अपने निबंध गाय के साथ उनके निजी संबंधों के आधार पर लिखे थे। बहुत प्यारी बातें उभर कर आईं थीं। गाय और उससे जुड़ी हर छोटी–बड़ी बात को बच्चों ने बखूबी लिखने की कोशिश की थी। उनके लेखन में वर्तनी की बहुत अशुद्धियां थीं लेकिन भाषा उनकी अपनी थी जिसमें उनके परिवेश की बोली के शब्द घुले–मिले थे। भाव और उनका प्रवाह सहज था। मौलिक चिंतन तो था ही कल्पना को व्यक्त होने का भरपूर अवसर मिला था। हर निबंध में उनकी अपनी छाप थी। लेकिन दो कॉपियां देखकर मैं ठिठका। दोनों में बहुत समानताएं थीं। दोनों कॉपियों में लगभग एक जैसी बातें लिखी गई थीं। राहुल ने लिखा था, *''मेरा बाबू पार साल चम्भू बाबा के मेला से एक गाय लाया है। गाय के एक बछवा है। बाबू खेत से हरियार (हरी घास) लाता है और कटिया मशीन से कतर कै भूसे मा मिलाते है। अम्मा भूसे मेखरी (खली) से सानी लगाती है और दोहनी करती है। दोहने मे मै भूसा मे पिसान धुरुकता हूं और गाय ढाई लीटर दूध देती है। और बाबू सुबेरे पहर का दो लीटर दूध बेच आता है। वहै पैसे का आलू–भांटा लाते है। और कापी, पेन लाता है। इतवार का दूध अम्मा औट लेती है और मिठाई बनाती है। और एक पहरे का दूध का माठा भांते है तौ नेनू निकर आता है तौ रोटी मा चुपर लेते है। और नेनू टघराय के एक किलो घी जुहा लिया है। गोबर से अम्मा कंडा पाथती है और सुखा जाने पर चुल्हा मा रोटी बनाने को आग बारते है। मैं रोज सुबेरे और स्कूल से लौटने के बाद बछवा को खेलाता हूं और उसके साथे साथ दौड़ता हूं। गाय पहले सबका मारती थी पर अब नही मारती है।''* यह निबंध पढ़कर मन खुश हो गया। बच्चे के अपने भाव, उसकी अपनी भाषा में जैसे किसी सरोवर से डुबकी लगा–लगाकर बाहर निकल रहे हो। दूसरी कॉपी आकांक्षा की थी। उसने राहुल की बातों से मिलती–जुलती बातें लिखी थीं। मैंने दोनों को बुलाया और जानना चाहा कि जब सबको अपन–अपनी गाय पर निबंध लिखना था तो फिर तुम दोनों की कॉपियों में ये बातें एक जैसी कैसे हैं? उनके उत्तर सोचने को मजबूर कर रहे थे। राहुल का कहना था कि उसकी अपनी गाय के साथ दिनभर जो होता है उसे वह देखता है, उसी को लिखा है। आकांक्षा ने कहा कि उसके पास गाय नहीं है। उसने जो निबंध लिखा है वह राहुल की गाय पर है। राहुल उसके पड़ोस में रहता है। राहुल और उसके मम्मी–पापा जो कुछ भी गाय के साथ दिनभर करते हैं उसे वह देखती है। उसी आधार पर यह निबंध लिखा है। बच्चों का यह प्रयास दिल को सुकून दे रहा था। कुछ बच्चों ने यह भी बताया कि उन्होंने अपने पालतू कुत्तों पर भी इसी प्रकार निबंध लिखा है। मैं बच्चों में निबंध लेखन की बन गई एक सामान्य समझ देख पा रहा था।

मैं सोच रहा था कि हमारे शिक्षक बच्चों को लेखन अभिव्यक्ति के ऐसे मौलिक अवसर क्यों नहीं उपलब्ध करा पा रहे हैं। बच्चों को मौलिक चिंतन के पर्याप्त अवसर दिए जाने चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा– 2005 में इस बात की बार बार अनुशंसा की गई है कि बच्चों को रटने के बजाए उनमें समझ विकसित करते हुए मौलिक चिंतन–मनन के अवसर उपलब्ध कराए जाएं। हम अपने तरीके लाद कर कहीं बच्चों की सोचने–समझने की उसकी मौलिक और प्राकृतिक सोच को कुंद और धारहीन तो नहीं कर रहे हैं, इस पर हमें सोचना पड़ेगा।

प्रमोद दीक्षित 'मलय' : ब्लाक संसाधन केंद्र नरैनी (बांदा) में सह–समन्वयक (हिंदी) के पद पर कर्यरत हैं।